

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 दीप-जोति तम-हार, घट पट परकाशै महा ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 धूप घान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल-फूल चरु ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप जानैं नियत, ग्रन्थ-पठन व्यवहार ।
 संशय-विभ्रम-मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार ॥

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यग्ज्ञान-रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
 अच्छर शुद्ध अर्थ पहिचानो, अक्षर अरथ उभय संग जानो ॥
 जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइए ।
 तप रीति गहि बहु मौन देकैं, विनय-गुन चित लाइए ॥
 ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना ।
 इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।